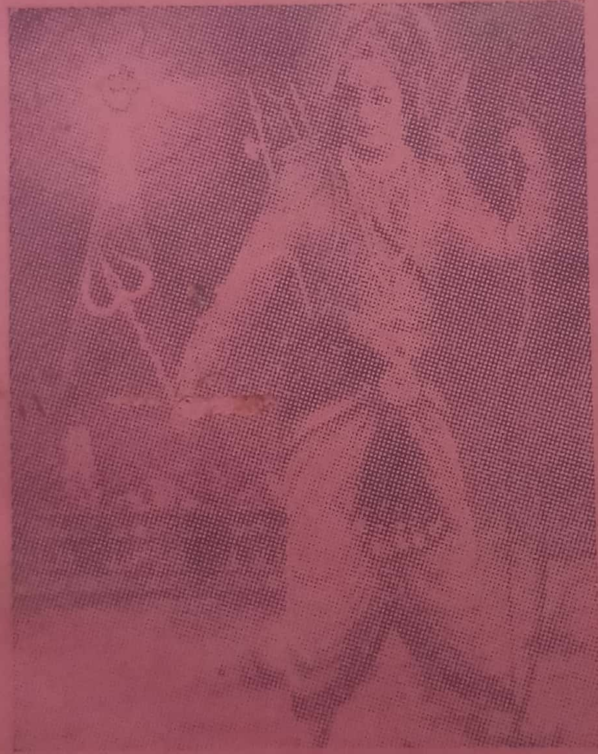
हन्त ! अयोध्याकाण्ड



संकलयिता

डॉ० मुरलीधर झा

हन्त ! अयोध्याकाण्ड

संकलयिता
डा० मुरलीधरझा

प्रकाशक—

मैथिली-मंदिर

राजकुमारगंज, दरभंगा

मुख्य सहयोग : श्रीरेवतीरमणझा 'व्यास' (जमशेदपुर)

प्रथम संस्करण—१९६१

एगारह सय प्रति

मूल्य—तीन टाका

मुद्रक—

१ मिथिला प्रेस

राजकुमारगंज, दरभंगा

२ कुमार प्रिंटिंग प्रेस

गुल्लोबाड़ा, दरभंगा

श्रीराम-जन्मभूमिक पुनरुद्धारक हेतु बलिदानी कार-सेवक क

पुण्य-स्मृतिमे

समर्पण

जगदम्बा सीताक श्वसुर गृह पुण्य अयोध्या धाम
मर्यादा पुरुषोत्तम जन्म ग्रहण कयलनि जेहि ठाम
ताहि भूमिकेँ कयल अपावन आबि आसुरी शक्ति
सहि नहि सकल जकर अन्तस्तलमे छल अनुपम भक्ति
प्राणाहुति दय से देशक रखलनि गौरव, सम्मान
समय-समयपर करइत रहला अपन-अपन बलिदान
तकर मुक्ति हित जे बलिदानी कयलनि जीवन अर्पित
साश्रु तनिक स्मृतिमे मिथिला दिससँ ई सुमन समर्पित

भावना-उद्भावना

३० अक्टूबर तथा २ नवम्बर १९९० (देवोत्थान एकादशी—विद्यापति त्रयोदशी) इतिहासक क्रूरतम तिथिक रूपमे सदा-सर्वदाक लेल कलंकित भऽ गेल जहिया अयोध्यामे राम-जन्मस्थलपर मंदिरक पुनर्निर्माण लेल जुटल लाखो शान्तिप्रिय निहत्थ जनतापर सरकारक एकपक्षीय बर्बर दमन-चक्रक कारणें हजारक हजार राम-भक्त बलिवेदीपर चढ़ि गेल । एहि अकाण्ड ताण्डवपर मानवता कुहरि उठल, राष्ट्रियता व्यथित भेल ।

देशभक्त हिन्दूसमाजक हृदय दहलि उठल । विभिन्न भारतीय भाषा-साहित्यमे एहि कुकाण्डक प्रतिक्रिया आबऽ लागल । मैथिली आ रामक सम्बन्ध तँ पारिवारिक अछि, अकाट्य अछि । मैथिली साहित्यकारलोकनि सेहो कर्तव्यक निर्वाहमे पश्चात्पद नहि रहला। ओहि महान हुतात्माक पावन स्मृतिमे मैथिली साहित्य दिशसँ सारस्वत श्रद्धांजलिक प्रतीक प्रस्तुत संकलन थिक । एकर क्षीण कायामे मैथिलीक सभ कोटिक सभ तूरक कविक भावना भरल भेटत ।

एकर प्रकाशनमे अनेक व्यक्तिक सदाशयता-सहायता सहज उपलब्ध भेल अछि। नाम गना हुनकालोकनिक निःस्वार्थ उदार साहाय्यक मूल्य कम नहि करऽ चाहैत छियनि ।

जय श्रीराम ! जय मैथिली !

—मुरलीधरझा

हन्त ! अयोध्या कांड

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

जतय न वध हो अवध वैह थिक ततय वधिक ढुकि गेल
भरत मिलाप जतय तत' भारतमे विलाप मचि गेल
लंका-कांड अकांडहि घोषित घृणित अयोध्या-कांड
रामराज्य अभिषेक हेतु पुनि रचबे उत्तर-कांड

....

योद्धा-युद्ध न कय सक तेँ ई नाम अयोध्या ख्यात
साकेतक संकेत निकेतन शान्तिक छल अवदात
मुक्तिपुरीमे प्रथम मान्य श्रीरामक जन्म - स्थान
के न जनैछ मनुक नगरी ई मानवताक निधान

सत्य हरिश्चन्द्रक, दिग्-विजयी रघुक विजय - सन्धान
गो-चारण दिलीपकेर, मुनि वसिष्ठकेर आश्रम ध्यान
दशरथ-रथ चालित मर्यादा-पुरुषक पुण्य स्थान
रामायणक कथा सुविदित अछि सबतरि वेद-पुरान

कथा-सरित प्रचलित अछि यवन सकल नहि कय अवरोध
विक्रम सहित मृगांक उदित भए कयलनि तिमिर निरोध
'साकेतम् अरुणद् यवनः' ई भाष्यक अछि दृष्टान्त
चेता गेल छथि यती पतंजलि दत्त-वत्तीक नितान्त

कत-कत दैत्य-असुर शक-यवन पठान-मुगल उद्दण्ड
इतिहासक न इरोत, इजोत न मिझा सकल बरिबण्ड
आक्रामक बर्बर कहिओ मन्दिर कय मटियामेटि
पुरातत्त्व इतिहास हटबइत कत बलि पड़ल सहेटि

देवोत्थान पर्वपर गर्वी असुरक ई उत्पात
रथ-पथ रोकल, जनमत मोकल, रामभक्तकेर घात
राहु-केतु ग्रह ग्रस्त दिवाकर अस्त मिशाकर ज्योति
झहरि खसल हा हंत! गगनकेर नक्षत्रक मणि-मोति

शत-शत मनुज हताहत होइतहुँ को न गलित हिम खंड
गंगा-यमुना-सिन्धु-नर्मदा द्रवित धरा शत खंड
सरयू-जल शोणितसँ पाटल घाट-बाट रक्ताक्त
'ग्रावा रोदिति, दलति वज्रहृदयम्' ई दृश्य अवाप्त

एक क्रौंचकेँ बधिक बेधि पाओल दुःसह अभिशाप
'मा निषाद'केर क्रोध-घृणा-करुणाक मिलित परिताप
रामायण रचनाक स्रोत बनि कवित वेदना-मूल
महावीर उत्तर-चरितक भवभूतिक रचना तूल

तुलसी मानस, कंबु कंठ, कृति कृत्तिवास, पद भानु
देश-देश भाषा-उपभाषा व्यापल ज्वलित कृशानु
सहस-सहस कवि-कलाकारकेर रचना चित्र-चरित्र
रेखित अनुलेखित मठ-मंदिर, गुफा, ग्रन्थ, पट-चित्र

आइ मौन अछि कवि-लेखक, रसनापर ताला बंद
छटपट मानवतापर दानवताकेर ई छल-छंद
तथाकथित नेता अभिनेता कलाकार कवि वृन्द
अछि सुतल भूतलक चेतना, हृदय हन्त! निष्पन्द

खर-दूषण पुनि जन-स्थानमे चक्रचालि चलबैछ
अहि-महि-रावण दल उठि-हठि रामक दलपर उमड़ैछ

सोधि देल इतिहास, ग्रास कयलक संस्कारक मूल
मुग्ध-लुब्ध ई गिद्धक दल अगुसर सर-सरयू कूल

पंक पड़ल छै, उरपर दृगपर लेपल कारिख अंध
प्राची भानसमे पंकज अंगज रवि-किरण निबंध

भारतीय हे ! आर्य पुरुष हे ! रवि-शशि वंशी शूर
ऋषि-मुनि, रक्त प्रबाहित धमनी संस्कारित रस पूर

सूर कबीर दादु नानक रैदासी सूफी संत
एकलव्य भामा वंशज, प्रताप शिव अंशज हंत

दयानन्द अरविन्द विवेकानन्दक शिष्य विशिष्य
मेटि कलंक, वंकिमक मंत्र 'मातरं वन्दे' दिश्य

— ...

मायापटु मधु-कैटभ अटपट बाजि रहल विष बोल
जल-थल लंवित कंपित वसुधा, मचल विश्वमे घोल

युग-दृग-पटल खुजल, जन-गण-मन जाग्रत अछि प्रत्यक्ष
निद्रा - मुद्रित मधुसूदन मर्यादा-पुरुष समक्ष

रे जयचंदी, मीरजाफरी ! राष्ट्रद्रोही ! क्षुद्र
पाषंडी षड्यंत्री ! देखहिँ तांडव-रत जन रुद्र

चक्रचालि चलतौ नहि पंजा अड़तौ विधि हत वाम
दाशरथिक पथ क्षितिज-मूल रथ चलि पड़ले अभिराम

परशु-राम बल-राम धनुर्धर धर्मक विग्रहवान
पार्थ-सारथी कृष्ण रथी जन-अर्जुन निष्ठावान

माथुर कृष्ण, पाशुपत काशी, रामलला अवधेश
सबतरि आर्य युवा जाग्रत्, रहते न तिमिर अवशेष

प्राची चूल-मूल अरुणिम रेखा उगि अयलै प्रात
अमल कमल-दल सुरभि दिगंत बहैछ बसंत बसात
आब न रहतै तिमिर घोर, ने चोर निशाचर जोर
जागि उठल छै प्रहरी किरण प्रभाती क्षितिजक छोर

'उत्तिष्ठत जाग्रत वरं निबोधत' उठह सगर्व
विश्व-गुरुक पद रिक्त, भरह हे भारतवर्षक पर्व
आब न रावण-कुल संकुल दुर्दश ई देशक दृश्य
बना रहल छह नवयुग देखह उज्ज्वल ज्वलित भविष्य

आब न भरत-मिलापक भूमि उपर भारतक विलाप
देखु, कमल-दहपर चमकै छै रवि-कर प्रखर प्रताप
लंका कांड अकांडहि घोषित हन्त ! अयोध्या कांड
रामराज्य अभिषेक हेतु पुनि रचबे उत्तर कांड

अयोध्या देल जगाय

आचार्य डॉ० जयमन्त मिश्र

नेता करथि मञ्च चढ़ि-चढ़ि उद्घोष
कहथि धर्म-निरपेक्ष थीक ई देश
'हिन्दोस्तान' थिकैक करी नहि धर्मक बात
धर्म-कर्म थिक राष्ट्रद्रोह, तैं त्याज्य

सिक्ख, क्रिश्चियन, बौद्ध, जैन, इस्लाम
गुरुद्वार, गिरजाघर, मठ, मस्जिद केर नाम
आनी नहि जिह्वापर, वोट-बैङ्क नहि रिक्त
होय जाहिसँ, से थिक दलक आइ कर्तव्य

हिन्दू निष्क्रिय भेल, सुप्त, निष्प्राण
चिन्ता ओकर करक नहि, अनुसरणे करतैक
एहि बिकट दुर्दिनमे कऽ उद्बुद्ध
देल जागरण हिन्दू-वर्गक मध्य

कयल विभाजन धर्म अधर्मक बीच
नीति अनीतिक तत्त्व बुझा कहि देल
धर्म थीक कर्तव्य जीवनाधार
हिन्दू-धर्म रहित मानव पशु-तुल्य

धैर्य, क्षमा, दम, दया, शौच, अस्तेय
विद्या, ज्ञान, विवेक, शान्ति, सन्तोष
थिक ई हिन्दूधर्म सनातन सत्य
धर्म-त्यागी बनथि धर्म-निरपेक्ष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीभगवान्
धर्म-विग्रहेँ लऽ भूपर अवतार
नीति, धर्म, कर्तव्य-मार्ग उपदेश
देल, विश्व-कल्याण हेतु श्रीराम

जनिक कृपा-लव पाबि अयोध्याधाम
भेल विश्व-विख्यात पुण्यमय तीर्थ
राम-चरण-रज बलेँ मोक्ष-फल देल
मनुजमात्र जे हुनक शरण लऽ लेल

किन्तु कालवश ओतऽ विदेशी आबि
जन्मभूमि - मन्दिरकेँ कयलक ध्वंस
निःसहाय पिष्प्राण भेल, ई देखि
भारतवासी वज्रपात सहि लेल

आइ अयोध्या हिन्दू देल जगाय
धर्म तथा कर्तव्य - बोध कऽ देल
जयश्रीरामक मन्त्र सङ्ग सोत्साह
कर्तव्य-यागमे जीवन–आहुति लेल

महायज्ञ फल पाबओ भारत देश
रामराज्य सन राज्य राष्ट्रमे काम्य
राम-कृपा-लव ई नहि दुर्लभ, किन्तु
रामभक्ति, सद्‌बुद्धि प्राप्त हो, पूर्ण

सावधान भए सुनि लियऽ ऋषि मुनि जन केर कथ्य
'रामो विग्रहवान् धर्मः' थीक सर्वथा तथ्य ।

आक्रोश

श्री बबुआजी झा 'अज्ञात'

राम ! अहाँ केर जन्म भूमिपर भक्तक भक्ति-प्रतीक
भव्य भवन छल पूर्व-विनिर्मित मूर्त्ति मनोज्ञ अहीँक
पूजा अर्चा चरण-वन्दना छल चलैत सभहीक
ज्योति पथक अनुगमन करय तजि माया मोहव्यलीक

आयल मुसलमान उच्छृङ्खल आक्रामक बनि देश
निर्दय देलक विविध रूपमे जनकेँ कष्ट कलेश
मन्दिर तोड़ि बनौलक मस्जिद बाबर दुष्ट महान
पावन-भूमि अयोध्या नगरिक कयलक बड़ अपमान

समय विवर्त्तन-शील देश छल अपन गमौने तेज
आबि एतय शासक बनि बैसल नीति-निपुण अँगरेज
जागि उठल पुनि शौर्य भारतक क्रान्ति अहिंसक भेल
बोरिया-बस्ता बान्हि फिरंगी भागि एतयसँ गेल

त्याग तपस्या-निष्ठक प्रतिभा ! भारत भेल स्वतन्त्र
सर्व शुभोदय बुध अपनौलनि अधुनातन जनतन्त्र
किछु दिन रहल अवश्य देशमे गण-शासन अवदात
अधिकृत कयलक शिखर स्वारथी चौर्य धर्म कय कात

लागल करय जखन उठि जनता नव मन्दिर निर्माण
म्लेच्छक रुचि रक्षार्थी शासनक बिगड़ि उठल अभिमान
गोली लागल चलय दनादन जनता पर अविराम
लाश खसय लागल धरतीपर राम राम कहि राम

छल बढ़ैत जन आगु अहींकेर जयजयकार करैत
धाँय धाँय शब्दक सङ काया भू छल लुढ़कि खसैत
भक्त जनक छाती पर गोली सेना केर लगैत
लखि निपात दर्शक शोकाकुल अछि चीत्कार करैत

हृदय-विदारक क्रूर काण्ड ई दिन भरि रहल चलैत
रिक्त-हस्त जन रहल निरन्तर गोली लागि मरैत
शवके फेकि रहल छल सैनिक टाङ पकड़ि तत्काल
प्रवहमान छल रक्तें रञ्जित सरयू सरि जल लाल

हे रघुनन्दन! अहिंक जन्म-भू पर ई घटल अनर्थ
'ऐल पानि आ गेल पानि' सन होयत की बलि व्यर्थ ?
एहिसँ बेसी कहू हैत की धर्मक दुर्घट ग्लानि ?
एहिना रहत चलैत अधर्मक नित्य निरंकुश बानि ?

अस्थिकलश प्रति कोटि प्रणाम

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

श्रीराम जय राम जय जय राम
जयतु जानकीपति श्रीराम
रावण - कुल पनुघल की फेर
जे करैत अछि एहन अन्हेर । श्रीराम
अथवा को पुनि जनमल कंस
चतरि रहल की दनुजक वंश । श्रीराम
नाम मुलायम क्रिया कठोर
सोबय पड़त जकर दुहु ठोर । श्रीराम
जनमल कलियुगिया शिशुपाल
जकरा शिर चढ़ि नाचय काल । श्रीराम
जकर विधाता सहजहि बक्र
कृष्णक चलत सुदर्शन चक्र । श्रीराम
यादव - कुल कुड़हरि - अवतार
कयल राम - भक्तक संहार । श्रीराम
भगवद् ध्वज टेकल हनुमान
लेथु सैंह पापो केर प्राण । श्रीराम
विश्वनाथ केर गलल प्रताप
सात जन्म सहता संताप । श्रीराम
मायक कोखि कलंकित कैल
अनकर पाप अपन शिर धैल । श्रीराम

क्षमा करत नहिए इतिहास
युग युग लोक करत उपहास । श्रीराम
राम जन्म - भूमिक रक्षार्थ
अस्थि - कलश कहि रहल यथार्थ । श्रीराम
व्यर्थ न हैत एते बलिदान
जैत निखत्तर सब शैतान । श्रीराम
अपन कैल जीवन बलिदान
रखलनि जे हिन्दुत्वक मान । श्रीराम
सद्यः मुक्ति पाबि जे लेल
जीवित जनके शिक्षा देल । श्रीराम
थिक नश्वर ई मनुज शरीर
चलै चलू सब सरयू - तीर । श्रीराम
जननी जनक दुहू जन धन्य
जे जनमाओल भक्त अनन्य । श्रीराम
युग युग 'अमर' रहत जे नाम
ताहि अस्थिके कोटि प्रणाम । श्रीराम
श्रीराम जय राम जय जय राम
जयतु जानकी - पति श्रीराम ।

संकेत

डा० प्रबोध नारायण सिंह

आक्रांतक नृशंस अत्याचार
राष्ट्रीय अस्मिताक वक्षस्थल पर
ओकर पाद - प्रहार
लुंठन, प्रज्वलन, बर्बर बलात्कार
एवं तकर स्मारक
नहिं भऽ सकैछ
इतिहासक रक्षणीय धरोहरि।

कोन कारणें
तैमूरलंग, बाबर, हुलाकू, नादिरशाह
अलाउद्दीन वा औरंगजेबकें
आइ अकस्मात
इतिहासक आलोक - पुरुष
बनाओल जा रहल छन्हि ?

विश्व प्रेमक प्रथम सोपान थिक
आनक धर्मक समादर।
जेना
काबा, कर्बला, मक्का, मदीनाक मसीत
आ जेरूसलेमक अस्तबल
तहिना
अयोध्या - मथुराक जन्म - भूमि
आ मूल विश्वनाथ मन्दिर
जगद्वन्दनोय अछि।

अयोध्या

श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'

सीताकेर सासुर ओ रामक जे गाम
की लय विधाता छथि भेल आइ वाम

बहल रक्त मानव केर दानव केर राज
इतिहासक पन्नाकें कहबोमे लाज

लक्ष्मण केर बाण आइ भेल किए भोथ ?
हनुमानक भेल गदा आइ किए लोथ ?

मैथिलीक माथक सिन्दूरक अछि दाम
पूछै अछि वर्त्तमान बाजू श्रीराम

अयोध्याक माटि किए रक्ते अछि लाल
मन्दिर ओ मस्जिदमे भेद अछि विशाल

लव कुश केर पितृभूमि भऽ गेल उदास
तुलसी नहि तुलसी छथि भऽ गेलाह दास

अश्वमेध यज्ञ आब करता नहि राम
जय सियाराम जय जय सियाराम

देखल जेतै जे हेतै से

प्रो० शिवाकान्त पाठक

उठा शस्त्र देखल जेतै जे हेतै से
बहा रक्त-धारा करब पितृतर्पण

समर भूमिमे मोह ममता कथी के
कथीकेर अपन, भाइ-भातिज कथी के
मेटा दे तेना बीज वंशक न बाँचय
ने रावण रहय आ ने बाँचय विभीषण

अनुनय विनयसँ जलधि जड़ न मानय
न हिँसोपजीवी दया-भाव जानय
बिना शक्ति शान्तिक कथा मूर्खता थिक
ठठा खड्ग भूपर मचा दे प्रभंजन

जखन राम माहुर, जहर कृष्ण-राधा
महादेव बाजव जखन भेल बाधा
तखन शुद्धि लय शोणिते टा अछिनजल
सजा मुण्ड-माला करब मातृ-अर्पण

जल्दी करै सूर्य-संस्कृति न डूबय
सुजनताक आँचर अन्हरिया न छूबय
बरना महा रातिमे डूबि जायत
अहा श्रेष्ठतम विश्वकेर शान्त जीवन

भऽ रहलै तैयार

श्री प्रदीप 'मैथिलीपुत्र'

सावधान रे पापी बेसी बन नहि आब मदारी
भारतमाता केर सपूतक भऽ रहलै तैयारी

तों कलियुग केर कंस भेल छें बीज विदेशी तनमे
भारत केर ममता की हेतौ पापी तोरा मनमे ?
स्वयं विधर्मी सदा भेल छें तैं छौ अस्त्र दूधारी
भारतमाता केर सपूतक भऽ रहलै तैयारी

मेरठ भागलपुर सुझैत छौ किन्तु अयोध्या ओझल
जनु उलूक-संतान थिकें रे तें सुझैत छौ झलफल
कतबा दिन ठकमे जनजनकें टूटि गेलौ अपियारी
भारतमाता केर सपूतक भऽ रललै तैयारी

दनुजदलक तों संग दैत छें जहिठाँ रे पपिआहा
मानव-रक्तक दर्द ने कनियो कहि ने सकै छें आहा
जकरा तनमे शुद्ध रुधिर नहि से बनि रहल जुआरी
भारतमाताकेर सपूतक भऽ रहलै तैयारी

जय श्रीराम

डा० कमलकान्त झा

कीर्त्तन करैत नर्तन करैत, इतिहास रचैत
चलि गेल धाम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

मचि गेल सतासिम युद्ध अयोध्या नगरीमे
रचि गेल अपन इतिहास अयोध्या नगरीमे
भय गेल राममय दिशा देश सभ डगरीमे
नब्बे अक्टूबर पुनि आबओ जय जय श्रीराम
कीर्त्तन करैत…

ने न्यायालय केर बात चलल
ने लोकतन्त्र केर बात रहल
इतिहास पुराणक कथने की
सभ राखि ताक प्रतिबन्ध रचल
कार सेवा रोकि मोलायम
ओढ़ि लेल चद्दरि बदनाम
कीर्त्तन करैत…

ने प्रतिबन्धक परबाहि कयल
ने रोकछेकसँ भीति धयल
छल तीस अक्टूबर अपन लक्ष्य

छल पहुँचि गेल ओ लक्ष लक्ष
रणनीति गहल छल शिवाजीक
ओ ऊँच कयल राणाक नाम
कीर्त्तन करैत...

ओ साधु धयल हनुमान रूप
चालक बनि करतब कयल खूब
भक्त समस्तो मन्दिर धरि
छल पहुँचि गेल किछु ऊपर धरि
सरकारी दाबी चूर कयल
भगबा फहराओल जय श्रीराम
कीर्त्तन करैत

चहु दिशा मचल जय जय श्रीराम
चहु दिशा देशमे भेल नाम
एकतिस अक्टूबर भारत भरि
दीपावलीक गेल दृश्य पसरि
लाठी गोली केर चिन्ता नहि
मुखमे बस एकहि राम नाम
कीर्त्तन करैत...

पुनि दुइ दिनक विश्राम राखि
सुनि दुइ नवम्बर केर ख्याति
कार्तिक पूर्णिमा अमर दिवस
सरयू स्नानक पुण्य दिवस
स्नान ध्यान कय साधु सन्तगण
दर्शन हित सगले कयल प्रयाण
कीर्त्तन करैत...

के सोचल छल ओहि दिनक हाल
शोणित सँ धरती भेल लाल
रामभक्तकेँ घेरि गलीमे
बी० पी०क पुलिस छल बनल काल
निर्दोष निहत्था साधु सन्तपर
गोली वर्षा पहुँचौल धाम
कीर्त्तन करैत

मानवता-सरिता कतय गेल
दानवता दर्शन प्रखर भेल
हिन्दू जनताक अधिकार हरण
की भारत भूमिक ओहि वरण ?
हे रामभक्त हे देशभक्त
तन्द्रा त्यागू जय जय हनुमान
कीर्त्तन करैत नर्तन करैत
इतिहास रचौत चलि गेल धाम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

बाँको छौ

डा० विद्याधर मिश्र

लव कुश सन सीता केर बेटा
औखन करोड़ मे बाँकी छौ
चीत्कारे टा तोँ सुनि सकलेँ
फुफकार सुनै ले' बाँकी छौ

चटलेँ जे तरुणी केर सिनूर
जै माइक मनोरथ केलेँ चूर
ओकरा गर्भों मे औखन धरि
अभिमन्यु तोरा ले' बाँकी छौ

भट्टाबाड़ी केँ देखि तहूँ
सोचलेँ वृन्दावन यैह थिकै
सत्ता केर सनकीमे बुझलेँ जे
यैह जालियाँ-बाग थिकै
रे ! जनरल डायर केर सपूत
जीवित सुभाष केर नाती छौ

हे ! रे कसाइ !
तोँ दूरदर्शीनो नै देखलेँ
जे रामभक्त !! साधू निहत्थ !!
केँ बन्दी कऽ
चाबुकसँ पिटलक लवणासुर

से तोहीँ छेँ ?
तँ बूझि लहो
शत्रुघ्नक तरकश मे राखल
एक्के टा आयुध काफी छौ

सीता केर सासुर मे शोणित
केर धार बहा
तोँ ठाढ़ कोना
रहबेँ क्षणभरि रे रक्तबीज ?
तोँ बुझि ले कालीकेर खप्पर
औखन तोरा ले' खाली छौ

आतंकित कऽ जनमानस केँ
जे आत्मदाहमे झोँकि देलक
ताहू छुतहरपर वज्र कोना
खसलौ सद्यः से देखि लही
रावण सन वीर एखन तोँ नै
तोरा ले' बानर काफी छौ

जे छाती बीच अयोध्यामे
उद्घोष केलक श्री राम नाम
ओ छाती चेथरी चेथरी भऽ
धिक्कारि रहल छौ राम राम !!

गाण्डीव हाथ मे आबि गेलौ
बस शंखनाद टा बाँकी छौ

हिलत शत्रुक जड़ि निश्चय

प्रो० देवकान्त मिश्र

लागि गेल छो बीझ कृपाणक, आइ पिजा ले
'जय जय भैरवि' गीत हिन्द मे भाइ बजा दे
ठरड़ पाड़िकें सुतने एहिना भेल करै छै
अपने बढ़ि कें आगाँ एहिना कैल करै छै
जाग, लाग, अरि दल कें सब मिलि खूब मजा दे
जय जय भैरवि ....

औरंजेबक युग पुनि पहुँचल भारत-आङ्गन
चानन चाटल गेल, तदपि छैं बौसल जन जन
उठि चल वीर जवान एहन कें आइ लजा दे
जय जय भैरवि ....

जलियावाला बाग मे जहिना कहियो भेलै
सैह दृश्य पुनि राम-जन्म-थल मे जनु एलै
एहन कपूतक लेल ई धरती आइ तजा दे
जय जय भैरवि ....

बना मनोबल, साहस उर मे आन रे मीता
रक्षा हित तों कवच बना ले राम आ सीता
रावण बनि जे सम्मुख, तकरा पूर्ण सजा दे
जय जय भैवि ....

तोहर रक्त मे वीर शिवा केर शोणित दौड़य
प्रबल प्रतापक साहस, पाछाँ मूँह न मोड़य
मोन पाड़ि 'बजरंगदल'क कर ऊँच ध्वजा दे
जय जय भैरवि ...

तों करबें हुंकार हिलत शत्रुक जड़ि निश्चय
इतिहासक पन्ना मे वर्णित तोहर जय जय
राम राज्य पुनि आबय तेहने बन्धु प्रजा दे
जय जय भैरवि .....

अभीष्ट सिद्धि

डॉ० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

रामक विराट आदर्श-चरित परिचय थिक राष्ट्रक दिशा-दीप
परिवार-समाजक ज्ञानपीठ थिक मानवता केर धर्मप्राण।
अछि सेहो आइ कठघरा ठाढ़ राष्ट्रीय अस्मिता नजरबन्द
श्रीरामक जन्मस्थल बनाम बहुमत, अघोषित छै गुलाम।
बेदखल डीहसँ हो डीही, कब्जा कऽ ढेकरौ' काल-काँट
झहरौक न्याय केर नैन नीर सत्ता गिरोह केर स्वार्थ-फाँस!
की यैह स्वराज थिक, लोकतन्त्र जे हमर अपन अस्तित्व-चोर?
रहतैक कोना कऽ स्थिर समाज छै नायक जखनहि लिप्त खोर।
'अवधक वध हा! भेल अवध' से सुनि अवाक् भऽ गेल मगध
जाहो कुकृत्यसँ ओ भेलैक सुरसरिक तीर धरि अपवित्र
तकरहि पुनरावृत्ति कैल हा! रामक भुवि, द्रोही-चरित्र।
पिस्तौल-मशीनगन-बन्दूकक अट्टाट्टहास, भेल क्रूर-काण्ड
अध्यात्म-कम्प, दिग्घोष भेल हा! हन्त!! नृशंस-संहार भेल!
मनुखक की? रे साधु-सन्त केर गृहस्थाश्रमी भक्तवृन्द केर
मर्यादा, आदर्श चरित्र केर स्मारक-निर्माण-शक्ति केर!
पाटल रक्तें धर्मक्षेत्र छल लोहित सरयू टेढ़ घेंट छल
अत्याचारक नग्न-नृत्यमे बलिदानीक निर्वाण भेंट छल?
श्रद्धाञ्जलि दऽ बिह्वल-विलखल अवध अपन संकल्प सुनौलक
गेलौ प्राणपर वचन सुरक्षित हेतै अभीष्टक सिद्धि समष्टिक।

अयोध्या नरसंहार

डा० धीरेन्द्रनाथ मिश्र

दिव्य भूमि अछि बनल आइयो
नगरी पतित पावनी अयोध्या
आदर्श महिमा ज्ञान गरिमा मे
फलित चर्चित अवध्या
रघुकुल शिरोमणि पुरुष उत्तम
अवतार पाओल से जतऽ
रक्तरंजित भूमि सैह अछि
बनल एहिखन प्रकृति मध्या
हृदय आकुल मोन व्याकुल
क्षुब्ध भेलहुँ देखि दृश्ये
संहार-लीला नृत्य ताण्डव
काण्ड लंका अद्भुत अगत्या ।।
बजि गेल डंका राष्ट्र भरि
धमनी रुधिर सनसनी जागल
हड़कम्प सँ मचि गेल कण-कण
दानवक ई कुकृत्य हा हा
बहि गेल निरीहक रक्त धार
कार सेवा मे समर्पित
वीरता साहस नमूना
अन्य होयत कोन सत्वा
शंख फूकल गेल जहिखन
भीड़ लक्षहि मे जुटल
बनौलक रणभूमि शासक
कयल हत्या जन निहत्था

नरसंहार

डॉ० नबोनाथ झा

आइ रामजन्मभूमिपर
भऽ रहल नरसंहार
मानवता अछि कानि रहल
देश बनल अछि श्मशान।
कतोक शिशु भऽ गेल अनाथ
कतोक मायक कोर भऽ गेल शून्य
कतोक नारीक पोछा गेल सीमन्त
लिखा रहल शोणितसँ मानवताक अश्रुमय इतिहास
कऽ रहल मानव सर्वत्र चीत्कार।
तानाशाह प्रशासक
अन्ध धृतराष्ट्र जकाँ
भऽ गेल स्वार्थान्ध।
भूजि रहल मानवकें लावा जकाँ
एकहि कनसारमे।
कतोक निहत्थाक
कयलक अछि हत्या।
हिन्दू आ मुसलमानकें
लड़ौलक अछि ई हिजरा सरकार
विश्वमे नहि भेल छल
सम्प्रति एहन नृशंस संहार
देश सम्प्रति भऽ रहल जर्जर

करैत रहल मानवता पर बर्बर प्रहार
ई शिखंडी सरकार।
मानवता अछि कानि रहल
देश बनल अछि श्मशान।
उठू देशवासी !
कानि रहल छथि भारतमाता
आब करब की जीबि ?
नहि राखब आब मुँह सीबि ?
आब एक-एक कें
करऽ पड़त
आजुक दुर्योधन, दुःशासन
आ जयद्रथक
बस बध आ बध ....।
तखने होयत
ओकर
पाशविक प्रवृत्तिक
समूल संहार
आ एतदर्थ होयत समस्त मानव-कल्याण
अथच देशमे रहि सकत अमनचैन।

वाह रे संविधान !

श्री जयप्रकाश चौधरी 'जनक'

जे नयन निरेखल आह ! दृश्य,
कानय टा जानय बिनु वाणी।
नहि लिखि सकता कर-कलम अन्ध,
धर्मक रण थल गत कत प्राणी ।।

अवतार हरिक सातम जेहि ठाँ,
ताहू गर्भक घर पर खोंखो।
कऽ रहल तुरुक जे नवघरिया,
के मानत ! हिन्दू सन्तोषी ।।

जे एक बली बजरंग जाय,
सोनक लंका डाहल सत्तो ।
से शत-शत बजरंगक दल हा !
गोलिक शिकार चौदिश चित्तो ।।

छथि महानिन्न मे सहस भक्त,
आ दिन कहबय देवक उठान।
की अपना इष्टक नाम लेब
अपराध ? वाह रे संविधान !

जे लहू-बुन्न खसला धरणी,
नहि मानत ऊठत से हिलोर ।
बजरंगक दल अछि कैक कोटि,
घर–घरमे छथि रामे किशोर ॥

बन्दूक टैंक पड़ले रहतौ,
रामायण पढ़ रे मूर्खराज !
रामक शर मे की शक्ति प्रबल,
से ढाहि खसाओत सभक ताज ॥

गद्दी चढ़ि अत्याचार कैल,
निर्मम हत्या जे बान्हि फाँड़ ।
से साँझक प्राते भोगि लेल
भरि हाथ चुड़ी आ पट्ट राँड़ ॥

मन्दिर बनमा बनतै निश्चय,
अरजल पापी पापक ढेरी ।
थिक राजधर्म केर जाँच यार,
ततबा धरि गहुवर मे देरी ॥

चलू अयोध्या

श्री चन्द्रशेखर चौधरी 'बटोही'

चलू अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण।
श्री रामक नामे अछि गुञ्जित सगरो हिन्दुस्तान॥

जहिं-तहिं मन्दिर ढाहि खसौलक यवन विदेशी नाशी।
देखू एकर प्रमाण अयोध्या, मथुरा संगहि काशी॥
हिन्दुस्तानक संस्कृतिकेँ विध्वस्त कैल शैतान।
चलू अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण॥

साधु-संत जुटलाह तपस्वी, ऋषि-मुनि धर्माचारी।
मन्दिरकेर निर्माण हेतु छल जन समुदायक धारी॥
गाम-गाम ओ नगर-नगरमे जन-जन केर आह्वान।
चलू अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण॥

राजनयिक सत्ता केर बल पर रचलक दुःषड्यंत्र।
रस्ता-पैड़ा ढाठ लगौलक क्रूर प्रशासन तन्त्र॥
बन्दी भेल कते अभियानी, नहि अछि तकर ठेकान।
चलू अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण॥

रामभक्त पर होमय लागल बन्दूकक बौछार।
रामक जन्मभूमि पर बहलै मानव-रक्तक धार॥
क्यो ने बाजल, चुप्पी सधलक राष्ट्रक गुम्म विधान।
चलू अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण॥

सुनि ले रे हत्यारा पापी नीक ने होयतो तोरा।
जनता केर अदालत मे रे! लागत एक दिन कोड़ा॥
क्षमा करत नहि भारतवासी हिन्दू केर सन्तान।
अयोध्या भऽ रहलैए पुनि मन्दिर निर्माण॥

जय श्री राम

श्री विमलेन्दु शेखर पाठक

हे राम-भक्त नहि व्यर्थ जायत नि:स्वार्थ देल बलिदान।
दुष्ट दानवक कयलहुँ अछि अपनहि सभ मर्दित मान।।
रहतै जा धरि धरती अम्बर ताबत रहते नाम।
रहब सदा जन-जन मे व्यापित यावत रहता राम।।

मन्दिर ओही ठाम बनय थिक ईह परम अरमान।
शोणित नद बहलैक, बहौ, नहि सहब आब अपमान।।
सत्ता सुख मे मगन पातकी करय न अधिक गुमान।
हरविरड़ो उठलै समाज मे जय-जय-जय श्रीराम।।

चिन्ता करु न, हमहुँ आयब आ शोणित देब बहाय।
देब माथ पर नचइत सभटा भोटक भूत भगाय।।
जाग्रत अछि सौंसे समाज निज प्राण हाथ मे नेने।
मन्दिर भव्य बनयबा लय संकल्पक असि कर धेने।।

कयल कलंकित सभ पापी मिलि भारत-भू इतिहास।
एहि युगकेर अबतारी करतौ रावण-वंशक नाश।।
करमे गहब कुठार तखन छुटतौ दानव केँ घाम।
सस्य श्यामला भारत माता मुसकैती सभ ठाम।।

खण्डित इतिहास

श्री चन्द्रेश

बर्बर दानवताक कलंकित इतिहास
चमचमा रहल गहनतम अन्धकार मध्य
सुनसान-बीयावान शून्यक घेरामे
अयोध्याक धरतीकेँ रक्तरंजित कऽ
पवित्रताक हवनकुण्डमे चढ़ौने
धर्मनिरपेक्षताक अढ़मे जीवित मनुक्खक लहास।
बीसम सदीक उतरार्द्ध मचा देलक
धार्मिक सद्भावक डाँड़ तोड़ि
घीँचि देलक विभाजक रेघा, मचि उठल बबंडर
धर्म आ प्रेमक खण्डित होइत आस्था आ विश्वास।
राजनीतिक बिद्रूपताक पसरल आतंक
तोप आ मशीनगनक गोला-बारूद
भेँसि देलक अनगिनत मनुक्खक छाती
हुकरि उठल सिनेह-समता आ प्रेम
विखण्डित भऽ उठल पाषाणी गुम्बद
मुदा, चंठ बनि बमकैत रहल कठमुल्ला
धधकैत ज्वालामे नैतिकताकेँ मुड्डाह करैत।
बलिदानक ई अस्थिकलश शूल बनि हियमे गड़ैत
माङि रहल जबाब
लहकि रहल देश, प्रश्न जाति आ धर्मक नहि
सभ्यता संस्कृतिक प्रतीक हवा आ अद्वैत आकाशक बीच
यथार्थपरक धरतीक रक्तबीज
देखि रहल सम्पूर्णताक ज्वालामे अस्मिताक बोध
अमिट बनल छटपटाइत मानवताक इतिहास।

मन्दिर बनतै ताही ठाम

डॉ० मुरलीधर झा

धन्य अयोध्या नगर भूमि औ जतय जन्म लेलनि भगवान
विश्वक देश कोनो नहि एहन जतय हिनक नहि हो गुण-गान

इन्डोनेशिया धरिमे पूजित होथि
जगत परिपालक राम
कम्बोडियाक चौकपर प्रस्तर-
प्रतिमा रामक शोभ ललाम
जावा आर सुमात्रावासी
राम – चर्चामे लीन रहैछ
मारीशस वोर्नियो देशमे राम-
नाम धुन के ने गबैछ ?
जतबा जे संबंध भजाबो
भजा सकैछी बाबरसँ
हिन्दुस्तानमे रहब अहाँ तँ
राम कहू सभ आदरसँ
जन्म–भूमिकेर मुक्ति–पताका
क्यो नहि रोकि सकं छ
दृढ़प्रतिज्ञ भऽ बढ़ल डेग अछि
क्यो नहि टोकि सकै छे
व्यर्थ न जायत राम–भक्त
बलिदानी केर बलिदान
तोड़ि देब हमसभ मिलि ओहि
अभिमानी केर अभिमान

जतय रामकेर जन्मभूमि अछि मन्दिर बनतै ताही ठाम
करत विरोध एहि नीतिक जे होयत तकर विधाता बाम

हे धर्मपथक बलिदानी

श्री चन्द्रभानु सिंह

अहुँक रक्तसँ गरम भेल अछि सरयू-नदी भवानी
युगसँ युग धरि नमस्कार हे धर्मपथक बलिदानी

बैशाखे बैशाख फुलायत कमल अहुँक शोणित-सर
चढ़ब माथपर कमलनयनकें अनुरागें संवतपर
नाम लेत मन्दिर घंटाध्वनि गढ़त विजयकेर बला
अपनहुँ रामाकार बनत तें सुधिकेर लागत मेला
कथनी नहि करनीएँ जगमे परम विभव गुणखानी

अहुँक अमोघ रक्तसँ अगणित राम वाण नव बनलै
कते जयंतक पाछाँ चलतै भरि देशे जनु तनलै
कान्ह उठा साकेत धाम धरि पहुँचौलनि जें कपिवर
तें पावन ई चरित भारतक शौर्य जगाओत भास्वर
सरयूकेर भभकी गबैत अछि मरमक कथा-पिहानी

एहि विशाल हिंदूक घरेघर लागल अवधक भोंपा
कोटिहुँ द्रुपदसुताकेर फूजल ताही दिनसँ खोंपा
एहि नृशंस हत्याक रक्तसँ उठतै तेहन बबण्डर
राम विरोधी पातकीक सब ध्वस्त हैत आडम्बर
तोंही सिकतामे सरयूतट चकमक चकमक चानी

तोरे सुधिक फुहारा उड़लै भारत बनल अयोध्या
जागल धरती जागल अम्बर लौछ करौट अवध्या
गर्दमिसान उठल सरयूतट लहरि पंक्ति रामायण
जा न हैत उद्धार मंदिरक ताधरि बरिसत साओन
बजरंगीक ध्वजा फहरेलो धरा,धाम-रजधानी
युगसँयुग धरि नमस्कार हे धर्मपथक बलिदानी

बलिदानीकेर धारी

डॉ॰ रामदेवझा

राम छला नहि पीर–पगम्बर ने गुरु कोनो पन्थक
निर्माता नहि सम्प्रदाय वा कोनहु धर्मक ग्रन्थक
राम छला दीनक उद्धारक अन्यायी केर नाशक
अत्याचार–अनीतिक बलधर जे छल पृथ्वी शासक

मूर्त्तिमन्त अवतार राम छथि युगजीवी आदर्शक
महिमा-गरिमा-मान-बिन्दु श्रीराघव भारतवर्षक
मर्यादा – पुरुषोमे उत्तम राष्ट्र-पुरुष इतिहासक
शुद्ध राष्ट्र-चिन्तन जकरा अछि से अछि राम-उपासक

ओहि श्रीरामक जन्मभूमिकें कयलक ध्वस्त विदेशी
जय-उन्मादें मान-मर्दनक छलै दुष्टता बेसी
मन्दिर केर ईंटा पाथर सँ भवन बनौलक बाबर
मानससरकें घोंकि-घाँकि कऽ बना देलक जनि डाबड़

पावन कहिया हैत अयोध्या कहिया मथुरा काशी
जकरा उद्धारक हित मुइला अगणित भारतवासी
बिसरि देब राणा प्रताप की बिसरब वीर शिवाजी ?
आक्रान्ता-जय ध्वनि मे जोड़ब अपनहुँ हाँजी ! हाँजी !

कायर अछि ओ जाति जोगाबय अपन कलंकक टीका
धिक जे लेअय ओहि कलंक कें मुकुट बनाबक ठीका
स्वाभिमान राष्ट्रक राखत की जे अछि सत्ताधारी
राष्ट्र-अस्मिता-रक्षा मे क्षम बलिदानी केर धारी

मर्यादा की जँ मर्दित जन्मस्थाने

डॉ० भीमनाथ झा

हम करब सहन नहि आब, बहुत दिन सहलहुँ
एखबा दिन धैर्यक देत परीक्षा रहलहुँ
सरकार अकाजक, शासक नाशक जखने
खुजि जाइत अछि बस बाट विनाशक तखने

जँ हिन्दुस्तानक शासक हिन्दू-द्रोही
जँ हिन्दुस्तानक शासक परहित-मोही
जँ बनय कोनो दोसर ठामक परिछाही
तँ से हिन्दुस्तानक शासक नहि चाही

जे शासन रामक जन्मभूमि-अवरोधी
जे शासन हिन्दू-आस्थाकेर विरोधी
जे शासन तुष्टीकरण-नीति अपनाबय
से शासन देशक शान-गुमान घटाबय

जे भारत देलक रामराज्यकेर नारा
अछि बनल जाहि बल जगतक आँखिक तारा
तहि रामक एतऽ घराड़ी धरि नीलामे
ई छल कलंक भारतपर ठामक ठामे

पुनि जागि गेल जनता कलंक धोबा ले'
एक्के ठाँ छाती तानि ठाढ़ होबा ले'
चारू दिससँ जनसिन्धु विराट उमड़लै
'श्रीराम'क घर्घर घोषक घटा घुमड़लै

चौंकल शासन—आसन डगमग सन लगलै
सद्ज्ञान-सुबुद्धि-विवेक सङहि सङ भगलै
कयलक पुनि बर्बरताक नाच हत्यारा
बहि गेल रामभक्तक रक्तक अह! धारा

छल एक कात मुँहपर श्रीरामक माला
दोसर दिस अह! उगिलैत तोप छल ज्वाला
छल एक कात दृढ़तासँ तानल छाती
दोसर दिस छल कायर कपूत नरघाती

देवोत्थानक अभियान न ठमकत ऐ ठाँ
जे जागि गेल से सभ दिन धमकत ऐ ठाँ
जाधरि न समाधानक रवि धमकत ऐ ठाँ
ता रामक भक्तक ठनका ठनकत ऐ ठाँ

जय हे नटवर! ताण्डवक ढंगपर नाचू
हे व्यास! 'महाभारत' नव स्वरसँ बाँचू
अहूँ धरू अपन विकराल रूप हे काली
झट आउ आब भूमण्डल पर बनमाली

वागीश्वरि! हमरा स्वरपर अहाँ विराजू
गणनाथ! लेखनीकेर नोकपर बाजू
दुर्गे! दुर्गतिसँ त्राण करू, मन पाड़ू
निज वचन, दुर्ग अरिवर्गक तुरत उपाड़ू

फाड़ू हिरण्यकशिपुक नृसिंह हे! छाती
मारू माधव! पुनि भेल कंस नरघाती
गाड़ू हे कृष्ण! पुनः कर्णक रथ-पहिया
धारू अर्जुन! गाण्डीव, गहब पुनि कहिया

हे राम ! उठू, विश्रामक नहि ई बेला
अवधेमे रावण-गणक आइ अछि मेला
लंका जिति की ? जँ बन्धुक हत हो प्राने
मर्यादा की जँ मर्दित जन्मस्थाने

हे भरत ! अग्रजक राखब कतऽ खरामो
छथि चिनमारेसँ निष्कासित पुनि रामो
हे लखन वीर ! नहि आइ अधीर देखै छी
उद्दण्ड शत्रुकेँ दण्ड किए नहि दै छी

हे वीर शत्रुहन्ता ! चिन्ता करु फेरो
पहुँचल अहीँक लग रिपु दन्तार घनेरो
हनुमान ! हरण अछि भेल रामजन्मस्थल
की आब अहँक भऽ गेल शिथिल अछि ओ बल

हे कौशल्या - कैकेइ - सुमित्रा माता !
छथि कतय सुतल सुत भारतभाग्यविधाता
जानकी ! अहँक सासुर की रहत उजड़ले
रामक जनपदपर सहसबाहु-पद पड़ले

हे लव-कुश ! आब लवो न कुशल तुअ धामे
अछि डुबल रक्तसँ आइ सगर तुअ गामे
उठि देखहु, नहि ई काल तोर विश्रामक
की तोरँ अछैतहुँ हो दुर्गति थल रामक

जे रहय सैकड़ो सालक निशा अयोध्या
रक्तात्त भेल से प्राची दिशा अयोध्या
राष्ट्रक सम्मानक नव दिनमान दमकतै
औतै वसन्त, सद्भावक सुमन गमकतै

सहयोगी कविगण

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

आचार्य डॉ० जयमन्त मिश्र

पं० श्री बबुआजी झा 'अज्ञात'

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

डॉ० प्रो० प्रबोध नारायण सिंह

श्री चन्द्रभानु सिंह

डॉ० प्रो० रामदेव झा

श्री प्रदीप 'मैथिलीपुत्र'

श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'

प्रो० शिवाकान्त पाठक

डॉ० भीमनाथ झा

डॉ० कमलकान्त झा

डॉ० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र

डॉ० विद्याधर मिश्र

प्रो० देवकान्त मिश्र

डॉ० नबोनाथ झा

श्री जयप्रकाश चौधरी 'जनक'

श्री चन्द्रेश

डॉ० मुरलीधर झा

श्री चन्द्रशेखर चौधरी 'बटोही'

श्री विमलेन्दु शेखर पाठक